# अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'

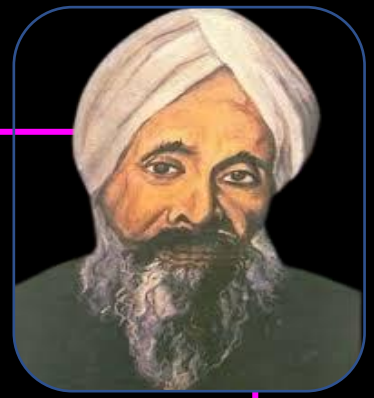

## संक्षिप्त-परिचय

- **जन्म**- 15 अप्रैल, सन् 1865 ई०।
- **जन्म- स्थान**- निजामाबाद (आजमगढ़) ।
- **पिता**- भोलासिंह उपाध्याय।
- **माता**- रुक्मिणी देवी ।
- **शिक्षा**- स्वाध्याय से विभिन्न भाषाओं का ज्ञान ।
- **भाषा-शैली**- ब्रजभाषा एवं खड़ी बोली, प्रबन्ध एवं मुक्तक शैली।
- **प्रमुख रचनाएँ**- प्रिय प्रवास, चोखे चौपदे, चुभते चौपदे, वैदेही-वनवास, पारिजात, रसकलश।
- **मृत्यु**- 6 मार्च, सन् 1947 ई०।

## साहित्यिक-परिचयः-

हरिऔध जी का जन्म 15 अप्रैल सन 1865 ई० में निजामाबाद (आजमगढ) में हुआ था। पिता का नाम भोलासिंह उपाध्याय व माता का नाम रुक्मिणी देवी था। स्वाध्याय से इन्होने हिंदी अंग्रेजी फारसी संस्कृत आदि भाषाओं का अच्छा ज्ञान प्राप्त कर कर लिया। अध्यापक, कानूनगो, अवैतनिक शिक्षक के रूप में काम करते हुए एवं हिन्दी माता की सेवा करते हुई 6 मार्च सन् 1947 ई० को पंचतत्व में लीन हो गए।

द्विवेदी युग के प्रमुख कवि हरिऔध जी ने गद्य और पद्य दोनों ही क्षेत्रों में हिंदी माता की सेवा की। हरिऔध जी ने सर्वप्रथम खड़ी बोली में काव्यरचना करके यह सिद्ध कर दिया कि खड़ी बोली में भी ब्रजभाषा के समान सरसता और मधुरता आ सकती है।

इनमें एक श्रेष्ठ कवि के समस्त गुण विद्यमान थे। उनका 'प्रियप्रवास' महाकाव्य अपनी काव्यगत विशेषताओं के कारण हिंदी महाकाव्यों में 'माइलस्टोन' माना जाता है। 'निराला' के शब्दों में -''इनकी यह एक सबसे बड़ी विशेषता है कि ये हिंदी के सार्वभौम कवि हैं। खड़ी बोली, उर्दू के मुहावरे, ब्रजभाषा, कठिन सरल सब प्रकार की कविता की रचना कर सकते हैं।''

## कृतियाँ–

हरिऔध जी मूलतः कवि ही थे, उनके उल्लेखनीय ग्रंथ निम्नलिखित हैं काव्य ग्रंथ–

- **प्रियप्रवास**– 'मंगलाप्रसाद पुरस्कार' प्राप्त हरिऔध जी का सबसे प्रसिद्ध और महत्वपूर्ण ग्रंथ है। खड़ी बोली का प्रथम महाकाव्य है।
- **अन्य**– कवि सम्राट, वैदेही वनवास, पारिजात, रसकलश, चुभते चौपदे, चौखे चौपदे, ठेठ हिंदी का ठाठ, अधखिला फूल, रुक्मिणी परिणय
- **हिंदी भाषा और साहित्य का विकास।**
- **बाल साहित्य**– बाल विभव, बाल विलास, फूल पत्ते, चन्द्र खिलौना, खेल तमाशा, उपदेश कुसुम, बाल गीतावली, चाँद सितारे, पद्य-प्रसून।